ईको-टूरिज्म मॉडल पर विकसित हो रहीं झीलें, तालाब व वेटलैंड

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। प्रदेश में झीलों, वेटलैंड्स और पारंपरिक जलाशयों को संरक्षण के साथ पर्यटन से जोड़ने के लिए बड़े स्तर पर कार्य किया जा रहा है। ईको-टूरिज्म मॉडल पर प्रदेश की प्रमुख 24 झीलों, वेटलैंड, तालाबों, रिवर फ्रंट और जल निकायों को ईको-टूरिज्म परियोजनाओं के तहत विकसित और पुनर्विकसित किया जा रहा है।

इन परियोजनाओं का उद्देश्य केवल पर्यटन सुविधाएं बढ़ाना नहीं, बल्कि जैव विविधता, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय आजीविका को मजबूत करते हुए प्राकृतिक धरोहरों को नई पहचान देना है। इससे प्रदेश की पारिस्थितिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जल क्षेत्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी।

लंबे समय तक प्रदेश की झीलें और जलाशय केवल स्थानीय समुदायों तक ही सीमित पहचान रखते थे, जबकि उनमें ऐतिहासिक, पारिस्थितिक और पर्यटन की अपार संभावनाएं मौजूद थीं। प्रदेश सरकार इन प्राकृतिक धरोहरों को व्यापक स्तर पर विकसित करने का कार्य कर रही है। पर्यटन विकास को केवल चुनिंदा जिलों तक सीमित रखने के बजाय प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि स्थानीय स्तर पर भी पर्यटन और रोजगार के नए अवसर विकसित हों।

-जयवीर सिंह, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री

प्रदेश की झीलों और वेटलैंड के विकास की योजनाएं तैयार की गई हैं। प्रकृति आधारित पर्यटन की बढ़ती संभावनाओं के बीच उत्तर प्रदेश अपनी झीलों, आर्द्रभूमियों और नदी तंत्र को पर्यटन अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बना रहा है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता भी दी जा रही है। **-अमृत अभिजात,** अपर मुख्य सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति

■ **नेचर ट्रेल और वॉच टावर से बढ़ेगा आकर्षण :** प्रदेश की कई प्रमुख रामसर साइट्स और पक्षी विहार इस पहल का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। आगरा स्थित सूर सरोवर पक्षी विहार, मुजफ्फरनगर का हैदरपुर वेटलैंड, रायबरेली का समसपुर पक्षी विहार, इटावा का सरसई नावर और मैनपुरी का समान पक्षी विहार संरक्षण आधारित पर्यटन के मॉडल के रूप में विकसित किए जा रहे हैं। हैदरपुर वेटलैंड में 320 से अधिक पक्षी प्रजातियां पाई जाती हैं, जबकि समसपुर में हर साल 75 हजार से अधिक पक्षियों की गणना दर्ज होती है। समान पक्षी विहार में प्रवासी मौसम के दौरान काफी जलपक्षी पहुंचते हैं। इन स्थलों पर नेचर ट्रेल, वॉच टावर, इंटरप्रिटेशन सेंटर, कॉटेज, कैफेटेरिया, पेयजल और अन्य पर्यटक सुविधाओं का विकास किया जा रहा है।

■ **पूर्वांचल से बुंदेलखंड तक ईको-टूरिज्म का विस्तार :** पूर्वांचल और बुंदेलखंड से लेकर अवध क्षेत्र तक झीलों और जलाशयों को भी ईको-टूरिज्म नेटवर्क से जोड़ा जा रहा है। बलिया का सुरहा ताल, कुशीनगर का रामपुर सोहरौना ताल, अंबेडकरनगर की दरवन झील, बाराबंकी की भगहर झील, सीतापुर की अज्जेपुर झील, अयोध्या की उधैला झील, चित्रकूट की रामनगर झील और बहराइच की बघेल झील को नए स्वरूप में विकसित किया जा रहा है। इन परियोजनाओं में घाट निर्माण, बर्ड वॉचिंग टावर, बच्चों के खेल क्षेत्र, कैफेटेरिया, व्यूइंग डेक, बांस ट्रेल, बोटिंग सुविधा, मल्टीपर्पज हॉल और पर्यटक सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। हाल ही में रामसर साइट का दर्जा पाने वाला सुरहा ताल इस अभियान की सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में शामिल है।

■ **झीलों का भी किया जा रहा विकास :** पर्यटन विभाग का फोकस केवल प्रसिद्ध स्थलों तक सीमित नहीं है। कौशांबी की अलवारा झील, फर्रुखाबाद की कुठला झील, कासगंज की दरियावगंज झील, बरेली की लीलौर झील और प्राचीन ढिलवारी राम कटोरा ताल, बहराइच की चित्तौरा झील तथा बांदा का ऐतिहासिक नवाब टैंक जैसे कम चर्चित जलाशयों को भी आधुनिक सुविधाओं के साथ विकसित किया जा रहा है। विशेष रूप से नवाब टैंक परियोजना में म्यूजिकल फाउंटेन, बोटिंग, मल्टीमीडिया शो और फ्लोटिंग म्यूजिकल फाउंटेन जैसी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। इससे बुंदेलखंड में जल आधारित पर्यटन को नई गति मिलने की संभावना है।